



ORIGINAL RESEARCH PAPER

Politics

हरियाणा में मतदान व्यवहार: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

KEY WORDS: मतदान व्यवहार, लोकतंत्र, शहरी-ग्रामीण विभाजन, राजनीतिक स्थिरता।

मंदीप सिंह

शोधार्थी राजनीतिक विज्ञान विभाग ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार (हरियाणा)

ABSTRACT

हरियाणा में मतदान व्यवहार भारतीय लोकतंत्र की जटिलताओं का एक प्रमुख उदाहरण है, जहां जातीय संरचना, आर्थिक कारक, क्षेत्रीय असमानताएं और राजनीतिक गठबंधन मतदाताओं के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन हरियाणा के मतदान व्यवहार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख कारकों, उनके प्रभावों तथा सांख्यिकीय तथ्यों का विश्लेषण करता है। अध्ययन से पता चलता है कि जाति-आधारित मतदान हरियाणा की राजनीति का मूल आधार बना हुआ है, जबकि आर्थिक विकास और शहरी-ग्रामीण विभाजन ने हाल के चुनावों में नए पैटर्न उभारे हैं। 1966 में राज्य के गठन से लेकर 2024 के विधानसभा चुनावों तक, मतदान व्यवहार में कांग्रेस से भाजपा की ओर झुकाव देखा गया है। मतदान व्यवहार राजनीतिक स्थिरता और विकास नीतियों को सीधे प्रभावित करता है, तथा लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए जातीय प्रभाव को कम करने की आवश्यकता है।

परिचय

भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार (ट्वजपदह ठमीअपवनत) एक गतिशील प्रक्रिया है जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित होती है। हरियाणा, एक कृषि प्रधान राज्य होने के कारण, मतदान पैटर्न में जातीय और क्षेत्रीय विविधताओं का स्पष्ट प्रभाव दर्शाता है। हरियाणा का गठन 1 नवंबर 1966 को पंजाब से अलग होकर हुआ था, जो भाषाई और सांस्कृतिक आधार पर हुआ। इससे पहले, यह क्षेत्र पंजाब का हिस्सा था, जहां चुनाव पंजाब विधानसभा के तहत होते थे। हरियाणा के गठन के बाद पहला विधानसभा चुनाव 1967 में हुआ, जिसमें 81 सीटों पर कांग्रेस ने 48 सीटें जीतीं, जो राज्य की राजनीति में कांग्रेस के प्रारंभिक वर्चस्व को दर्शाता है।

1970 के दशक में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी। 1977 के चुनाव में जनता पार्टी ने 75 सीटें जीतीं, जो इमरजेंसी के खिलाफ प्रतिक्रिया थी। 1980 के दशक में कांग्रेस की वापसी हुई, 1984 लोकसभा चुनाव में सभी 10 सीटें जीतीं। 1990 के दशक में क्षेत्रीय पार्टियां उभरीं, जैसे इनेलो (इंडियन नेशनल लोक दल), जो जाट समुदाय पर आधारित थी। 1999 में भाजपा - इनेलो गठबंधन ने लोकसभा में अच्छा प्रदर्शन किया। सन् 2000 के बाद, मतदान व्यवहार में बदलाव आया। 2005 विधानसभा में कांग्रेस ने 67 सीटें जीतीं, लेकिन 2014 में भाजपा ने 47 सीटें जीतकर बहुमत हासिल किया, जो मोदी लहर का प्रभाव था। 2019 में भाजपा 40 सीटें जीती, जेजेपी के साथ गठबंधन किया। 2024 विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 48 सीटें जीतीं, जो विकास और राष्ट्रीय मुद्दों पर मतदान का संकेत है।

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक

हरियाणा में मतदान व्यवहार विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से प्रभावित होता है। इन कारकों का प्रभाव राज्य की विविध जनसंख्या संरचना, ऐतिहासिक संदर्भ और वर्तमान मुद्दों से जुड़ा है। नीचे दिए गए प्रमुख कारकों का विस्तार से विश्लेषण किया गया है, जिसमें सांख्यिकीय तथ्य, उदाहरण और उनके राजनीतिक प्रभाव शामिल हैं। यह विश्लेषण चुनाव आयोग के डेटा, शोध अध्ययनों और हालिया चुनावों के पैटर्न पर आधारित है, जो दर्शाते हैं कि ये कारक कैसे मतदाताओं के निर्णयों को आकार देते हैं।

जातीय कारक

हरियाणा की राजनीति में जातीय कारक सबसे प्रमुख है, जो राज्य की सामाजिक संरचना का प्रतिबिंब है। राज्य की आबादी में जाट समुदाय लगभग 25-27 प्रतिशत है, जो राजनीतिक रूप से सबसे प्रभावशाली है। जाट मतदाता परंपरागत रूप से इंडियन नेशनल लोक दल (इनेलो) या जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) जैसी पार्टियों का समर्थन करते हैं, जो जाट-केंद्रित नीतियों पर जोर देती हैं। उदाहरणस्वरूप, 2014 विधानसभा चुनाव में जाट समुदाय के कांग्रेस से असंतोष ने भाजपा को लाभ पहुंचाया, जहां भाजपा ने जाट-बहुल क्षेत्रों जैसे रोहतक और सोनीपत में अप्रत्याशित जीत हासिल की। इसके अलावा, अहीर (यादव) समुदाय, जो दक्षिणी हरियाणा (अहीरवाल क्षेत्र) में 10-12 प्रतिशत है, कांग्रेस या क्षेत्रीय दलों का समर्थन करता है। अनुसूचित जातियां, जो लगभग 20 प्रतिशत आबादी हैं, बहुजन समाज पार्टी (वैच) या कांग्रेस की ओर झुकाव रखती हैं, क्योंकि ये दल आरक्षण और सामाजिक न्याय पर फोकस करते हैं।

धार्मिक कारक

www.worldwidejournals.com

धार्मिक कारक हरियाणा में मतदान व्यवहार को सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। राज्य की जनसंख्या में हिंदू बहुल (87 प्रतिशत) है, मुस्लिम (7, मुख्यतः मीओ समुदाय मेवात क्षेत्र में) और सिख (5 प्रतिशत) हैं। धार्मिक ध्रुवीकरण चुनावी रणनीतियों का हिस्सा बन जाता है, विशेष रूप से भाजपा द्वारा हिंदुत्व एजेंडे (जैसे राम मंदिर, गौ रक्षा) के माध्यम से। 2019 लोकसभा चुनाव में नूह (मेवात) दंगों के बाद भाजपा ने हिंदू-बहुल क्षेत्रों में मजबूत प्रदर्शन किया।

मुस्लिम मतदाता, विशेष रूप से मीओ, कांग्रेस या क्षेत्रीय दलों का समर्थन करते हैं, क्योंकि वे अल्पसंख्यक सुरक्षा और विकास पर जोर देते हैं। सिख समुदाय, जो उत्तरी हरियाणा में केंद्रित है, कृषि मुद्दों (जैसे किसान आंदोलन) के आधार पर वोट देता है, जो 2020-21 किसान विरोध में स्पष्ट हुआ, जहां सिख-बहुल क्षेत्रों में भाजपा को नुकसान हुआ। 2024 चुनाव में, धार्मिक मुद्दों ने ग्रामीण क्षेत्रों में 10-15 प्रतिशत वोट स्विंग पैदा किया।

आर्थिक कारक

आर्थिक कारक हरियाणा के मतदान व्यवहार में बढ़ते महत्व के हैं, विशेष रूप से कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था के कारण। राज्य में 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण है, जहां न्यूनतम समर्थन मूल्य, कर्ज माफी और सिंचाई जैसे मुद्दे प्रमुख हैं। किसान असंतोष, जैसे 2020 किसान कानूनों के खिलाफ आंदोलन, ने 2024 चुनाव में भाजपा को नुकसान पहुंचाया, जहां ग्रामीण क्षेत्रों में कांग्रेस ने 15 प्रतिशत अधिक वोट प्राप्त किए। आर्थिक विकास, जैसे गुडगांव और फरीदाबाद के औद्योगिकीकरण, शहरी मतदाताओं को प्रभावित करता है, जहां रोजगार और बुनियादी ढांचा मुख्य हैं। बेरोजगारी दर (युवाओं में 8-10 प्रतिशत) विरोधी वोट बढ़ाती है; 2019 में भाजपा की योजनाएं जैसे आयुष्मान भारत और पीएम-किसान ने ग्रामीण मतदाताओं को आकर्षित किया, जिससे उनका वोट शेयर 36 प्रतिशत पहुंचा।

शहरी-ग्रामीण विभाजन

हरियाणा में शहरी-ग्रामीण विभाजन मतदान व्यवहार की एक प्रमुख विशेषता है। ग्रामीण क्षेत्र (70 प्रतिशत आबादी) कृषि, जाति और स्थानीय मुद्दों पर फोकस करते हैं, जहां मतदान दर 75 प्रतिशत तक होती है। यहां पारंपरिक कारक जैसे खाप और परिवारिक प्रभाव मजबूत हैं। उदाहरणस्वरूप, ग्रामीण जाट-बहुल क्षेत्रों में इनेलो/जेजेपी 20-30 प्रतिशत वोट पाते हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्र (गुडगांव, फरीदाबाद) राष्ट्रीय मुद्दों (सुरक्षा, विकास) पर वोट देते हैं, जहां मतदान दर 65 प्रतिशत है। शहरी मतदाता शिक्षा और रोजगार पर जोर देते हैं, जिसने 2014 में भाजपा की 'मोदी लहर' को बढ़ावा दिया। यह विभाजन लिंग-आधारित भी है; महिलाएं (ग्रामीण में कम भागीदारी) परिवारिक प्रभाव में रहती हैं, लेकिन 2024 में 13 महिला विधायक चुनी गईं, जो सशक्तिकरण दर्शाता है। शहरी-ग्रामीण अंतर आर्थिक विकास से जुड़ा है; शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक वृद्धि ने युवा मतदाताओं को आकर्षित किया, जबकि ग्रामीण में जल संकट और फसल नुकसान ने विरोध बढ़ाया। 2019 में, शहरी क्षेत्रों में भाजपा का वोट शेयर 45 प्रतिशत था, जबकि ग्रामीण में 30 प्रतिशत।

अन्य कारक

अन्य कारकों में करिश्माई नेतृत्व, मीडिया, भाषा और सब-नेशनलिज्म शामिल हैं।

करिश्माई नेता जैसे भूपेंद्र सिंह हुड्डा (कांग्रेस) या मनोहर लाल खट्टर (भाजपा) व्यक्तिगत अपील से वोट प्रभावित करते हैं; 2014 में मोदी की छवि ने भाजपा को 33 प्रतिशत वोट दिलाए। सोशल मीडिया ने युवा मतदाताओं (18-25 वर्ष) को प्रभावित किया, जहां 2024 में डिजिटल अभियान ने 10 प्रतिशत वोट स्विंग पैदा किया। भाषा और क्षेत्रीयता (जैसे हरियाणवी पहचान) भी भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से क्षेत्रीय दलों में। पारिवारिक राजनीति (चौटाला, हुड्डा परिवार) और आपराधिक पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवार (जो 15 प्रतिशत हैं) मतदाताओं को प्रभावित करते हैं, हालांकि जागरूकता बढ़ रही है।

मतदान व्यवहार के प्रभाव

हरियाणा में मतदान व्यवहार राज्य की राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था को गहराई से प्रभावित करता है। मतदाताओं के निर्णय, जो जाति, अर्थव्यवस्था, क्षेत्रीय असमानताओं और राष्ट्रीय मुद्दों से प्रेरित होते हैं, न केवल चुनावी परिणामों को निर्धारित करते हैं, बल्कि सरकार की स्थिरता, नीति निर्माण और सामाजिक संरचना को भी आकार देते हैं। यह प्रभाव बहुआयामी है, जहां जातीय मतदान राजनीतिक अस्थिरता पैदा कर सकता है, जबकि आर्थिक कारक विकास-उन्मुख नीतियों को बढ़ावा देते हैं।

राजनीतिक स्थिरता पर प्रभाव

हरियाणा में मतदान व्यवहार मुख्य रूप से जातीय और क्षेत्रीय आधार पर होता है, जिससे राजनीतिक स्थिरता प्रभावित होती है। जातीय मतदान के कारण दल अकेले बहुमत हासिल नहीं कर पाते, जिससे गठबंधन राजनीति अनिवार्य हो जाती है। उदाहरणस्वरूप, 2019 विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 40 सीटें जीतीं, लेकिन बहुमत के लिए जाट-केंद्रित जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के साथ गठबंधन किया। दलबदल की परंपरा मतदाताओं के जातीय-व्यक्तिगत दबाव से बढ़ती है, जिससे सरकारें अस्थिर होती हैं। इससे विकास परियोजनाएं रुकती हैं और मतदाताओं में अविश्वास बढ़ता है, जिससे वोटर टर्नआउट में गिरावट आती है। हालांकि, यह विविधता लोकतंत्र की मजबूती भी दर्शाती है।

सामाजिक प्रभाव

मतदान व्यवहार सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डालता है, खासकर जातीय और धार्मिक तनावों के माध्यम से। जातीय आधारित मतदान से सामाजिक विभाजन बढ़ता है, जैसे 2016 जाट आरक्षण आंदोलन ने अशांति पैदा की। धार्मिक मतदान अल्पसंख्यक समुदायों में असुरक्षा बढ़ाता है, जैसा मेवात दंगों में देखा गया। महिला मतदाताओं का व्यवहार पारिवारिक प्रभाव से निर्देशित होता है, जिससे प्रतिनिधित्व कम रहता है (2024 में मात्र 13 महिला विधायक)। युवा मतदाता सोशल मीडिया से प्रभावित होते हैं, लेकिन उनकी कम भागीदारी सामाजिक परिवर्तन को धीमा करती है। सकारात्मक पक्ष में, विविध मतदान सामाजिक एकीकरण और आरक्षण जैसी नीतियों को मजबूत करता है।

चुनावी परिणामों पर प्रभाव

मतदान व्यवहार चुनावी परिणामों को सीधे निर्धारित करता है, जहां जाति, अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीयता वोट स्विंग पैदा करते हैं। उदाहरणस्वरूप, 2024 लोकसभा चुनाव में सिरसा सीट पर दलित-ग्रामीण मतदाताओं के कांग्रेस की ओर झुकाव से भाजपा हार गई। 2019 में मोदी लहर ने भाजपा को सभी 10 सीटें दिलाई। 2014 में आर्थिक विकास की अपील ने भाजपा को 47 सीटें प्रदान कीं। शहरी क्षेत्रों में भाजपा मजबूत रहती है, जबकि ग्रामीण में कांग्रेस या क्षेत्रीय दल प्रबल होते हैं। यह व्यवहार चुनावों को अप्रत्याशित बनाता है और रणनीतिक गठबंधनों की आवश्यकता बढ़ाता है, जो लोकतंत्र की जीवंतता दर्शाता है।

निष्कर्ष

हरियाणा में मतदान व्यवहार भारतीय लोकतंत्र की जटिलता और गतिशीलता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। राज्य के गठन (1966) से 2024 विधानसभा चुनाव तक, मतदान पैटर्न में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया है, कांग्रेस के प्रारंभिक प्रभुत्व से भाजपा की हालिया मजबूती तक। जाति अभी भी सबसे प्रमुख कारक बनी हुई है, जहां जाट (25-27 प्रतिशत), दलित (20 प्रतिशत) और अहीर जैसे समुदाय क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय दलों के बीच वोट विभाजित करते हैं। आर्थिक मुद्दे, कृषि संकट, डैच बेरोजगारी और कल्याण योजनाएं तेजी से निर्णायक हो रहे हैं। 2020-21 किसान आंदोलन ने ग्रामीण असंतोष को उजागर किया, जिससे 2024 में कांग्रेस को लाभ मिला, जबकि भाजपा ने सामाजिक इंजीनियरिंग और विकास कथा से एंटी-इनकंबेन्सी को पार किया। धार्मिक कारक (हिंदुत्व) ने हिंदू-बहुल क्षेत्रों में

एकजुटता पैदा की, जबकि अल्पसंख्यक मत कांग्रेस की ओर झुके। शहरी-ग्रामीण विभाजन ने भी भूमिका निभाई। ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च टर्नआउट और जाति-कृषि फोकस, जबकि शहरी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम भागीदारी। भविष्य में सोशल मीडिया और युवा जागरूकता जातीय प्रभाव को कमजोर कर सकती है। लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए राजनीतिक दलों को जाति से ऊपर उठकर समावेशी विकास, पारदर्शिता और शहरी-ग्रामीण संतुलन पर फोकस करना होगा। हरियाणा का मतदान व्यवहार भारतीय लोकतंत्र की जीवंतता का प्रतीक है, जहां अंतिम फैसला मतदाता के हाथ में रहता है।

सन्दर्भ सूची

- Gaur, B. S. (2024). From regional powers to modern campaigns: A comprehensive study of Haryana assembly elections. *International Journal of Innovative Research in Technology*, 11(4), 1-10.
- Kumar, A. (2013). Voting behaviour in Haryana Lok Sabha election 2009: An analysis. *International Journal of Physical and Social Sciences*, 3(1), 249-260.
- Chief Electoral Officer, Haryana. (2011). A study on voters' behaviour in Haryana: Awareness and participation (with special emphasis on youths). Government of Haryana.
- Dahiya, B. S. (2008). Power politics in Haryana: A view from the bridge. Gyan Publishing House.
- Goyal, O. P. (1981). Caste and voting-behaviour. Ritu Publishers.
- Jodhka, S. S. (2019). The Haryana state assembly elections: Puzzles and patterns. *Economic and Political Weekly*, 54(45-46), 1-5.
- The Indian Express. (2024, October 9). BJP's Haryana victory is a referendum on Modi's popularity, rejection of Congress's caste politics.
- The Hindu. (2018, December 26). Wooing voters in 2019: Some takeaways from December 2018. The Hindu Centre for Politics and Public Policy.
- Election Commission of India. (2024). Statistical report on general election to Haryana legislative assembly, 2024. <https://eci.gov.in/>